राजपूत काल में सामाजिक संगठन के ढांचे का स्वरूप

Dr. Rajkumar, Assistant Professor, Department of History, Seth G.L. Bihani S.D. Post Graduate, Sriganganagar

सारांश

राजपूत काल (प्रायः 8वीं से 12वीं शताब्दी) भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण था, जिसमें सामाजिक संगठन एक सुदृढ़, परंतु जटिल ढांचे में विकसित हुआ। इस काल में समाज मुख्यतः वर्ण व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें क्षत्रिय (विशेषकर राजपूत वर्ग) को प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक भूमिका प्राप्त थी।

सामाजिक संगठन का आधार जाति, गोत्र, कुल परंपरा और वंश पर टिका था, जो व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, अधिकार और कर्तव्यों को निर्धारित करता था। राजपूत काल में सामंतवाद के उदय के साथ जमींदारी और सामंत संबंधों का विकास हुआ, जिसने ग्रामीण समाज की संरचना और श्रम-विभाजन को नई दिशा दी।

नारी की भूमिका सीमित होने लगी, पर्दा प्रथा और बाल विवाह जैसी प्रथाओं का प्रचलन बढ़ा। दूसरी ओर, भक्ति आंदोलन और लोक परंपराओं ने सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित किया। शिल्पकार, व्यापारी और कृषक वर्ग की आर्थिक भूमिका महत्वपूर्ण थी, परंतु सामाजिक दृष्टि से उनका स्थान निम्न था।

इस प्रकार, राजपूत काल का सामाजिक ढांचा एक ओर परंपरागत वर्णाश्रमी व्यवस्था को बनाए रखते हुए, दूसरी ओर राजनीतिक परिस्थितियों, स्थानीय परंपराओं और आर्थिक संबंधों के अनुसार धीरे-धीरे परिवर्तित होता रहा। यह काल सामाजिक अनुशासन, जातिगत संरचना और आंतरिक सामूहिकता का एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: राजपूत काल, सामाजिक संगठन, वर्ण व्यवस्था, सामंतवाद, जाति संरचना, नारी स्थिति, सामाजिक गतिशीलता।